ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 23 कुल पृष्ठ-8 10 से 16 नवम्बर, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853123 सम्वत् 2079 अ. कृ.-02

गुरुकुल यमुनातट मंझावली, फरीदाबाद, हरियाणा का रजत जयन्ती समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली से ही सर्वोत्तम मानव का निर्माण किया जा सकता है

– स्वामी आर्यवेश

देश में सैकड़ों नये गुरुकुल खोले जायें – स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

गुरुकुल यमुनातट मंझावली, फरीदाबाद (हरियाणा) का रजत जयन्ती समारोह 7, 8 एवं 9 अक्टूबर, 2022 को हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। समारोह का शुभारम्भ 7 अक्टूबर को प्रातःकालीन यज्ञ के द्वारा किया गया। स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ के ब्रह्मा गुरुकुल होशंगाबाद के सचिव आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक जी रहे। विदित हो कि रजत जयन्ती के उपलक्ष्य में गत एक मास से गुरुकुल की भव्य यज्ञशाला में चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया था। जिसकी पूर्णाहुति 9 अक्टूबर, 2022 को हुई। यज्ञ की संयोजिका श्रीमती रेखा चौधरी जी तथा यज्ञ के संयोजक श्री आशीष शास्त्री जी रहे। यहाँ पर सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं ने यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान की।

7 अक्टूबर, 2022 को प्रातः 9 बजे से ध्वजारोहण किया गया, इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री शिवम गुप्ता एवं श्री बृजगोपाल खोसला जी रहे। स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी, स्वामी देवव्रत सरस्वती जी, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के कर कमलों से ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने उपस्थित श्रद्धालुओं का स्वागत एवं अभिनन्दन किया। ध्वजारोहण कार्यक्रम का संचालन व संयोजन गुरुकुल

मंझावली के आचार्य जयकुमार एवं डॉ. राजवीर सिंह शास्त्री ने किया।

ध्वजारोहण के पश्चात् प्रातः 10 बजे से उद्घाटन सत्र का शुभारम्भ हुआ। इस सत्र में सर्वप्रथम गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने वेद मंत्रों का पाठ करके मंगलाचरण किया। तत्पश्चात् प्रथम वक्ता के रुप में डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था अत्यन्त उन्नत पद्धति है, ये कागजी शिक्षा नहीं है अपितु प्रयोगात्मक शिक्षा व्यवस्था है।

इस अवसर पर डॉ. रघुवीर वेदालंकार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि वेद के उपदेश 'अनुव्रतः पिता पुत्रः' को स्वयं में आत्मसात् करते हुए स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने स्वकीय धर्मपिता ओमानन्द सरस्वती के व्रत पालन स्वरूप विभिन्न गुरुकुलों की स्थापना की। गुरुकुल भारतीय संस्कृति का संरक्षण कर रहे हैं और समाज का दायित्व है कि समाज गुरुकुलों को आर्थिक व सभी रूपों से सबल बनायें। वेदों की ज्योति गुरुकुलों से ही जलेगी और ओ३म् का ध्वज गुरुकुलों से ही ऊंचा उठ सकेगा।

डॉ. विनय विद्यालंकार जी ने कहा कि इस गुरुकुल की जब स्थापना हुई थी तब मैं यहाँ आया था और आज आया हूँ। शस्त्र व शास्त्र के निष्णात विद्वान् गुरुकुल से ही तैयार होते हैं। ऐसे गुरुकुल से अधीत ब्रह्मचारी ही राष्ट्र की प्रत्येक परिस्थिति को परिवर्तित व परिवर्धित कराने के प्रथम द्योतक होते है।

श्री विनय आर्य ने आचार्य–आचार्याओं को देवतातुल्य बताया और कहा कि यहाँ उपस्थित 90 प्रतिशत लोग गुरुकुल की ही देन हैं। इस रजत जयन्ती के पावन अवसर पर एक ब्रह्मचारी आचार्य बनने का संकल्प लें।

अपने उद्बोधन में डॉ. महावीर मीमांसक जी ने कहा कि स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी में बहुत शक्ति है। आचार्य यास्क ने आचार्य का लक्षण करते हुए 'वा' का प्रयोग किया है किन्तु स्वामी प्रणवानन्द के लिए आचार्य के लक्षण से विकल्पवाची 'वा' को हटाना

शेष पृष्ठ 6 पर

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी स्वामी देवव्रत सरस्वती जी स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी स्वामी आर्यवेश जी

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की महत्ता

— स्व० आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति

इस युग के महान् आचार्य जगद्गुरु ऋषि दयानन्द जी ने अपने क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में एक नवीन शिक्षा प्रणाली का प्रतिपादन किया है। यह शिक्षा प्रणाली गुरुकुल शिक्षा प्रणाली है। ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित यह गुरुकुल शिक्षा प्रणाली नवीन होते हुए भी अति प्राचीन है। वेदों और पुरातन भारतीय संस्कृत साहित्य में जिस शिक्षा पद्धति का उल्लेख है और आर्यों के अभ्युदय काल में प्राचीन भारत में जो शिक्षा पद्धति प्रचलित थी वह गुरुकुल शिक्षा पद्धति ही थी। इस दृष्टि से गुरुकुल शिक्षा प्रणाली अति प्राचीन शिक्षा प्रणाली है। परन्तु कालक्रम से हम भारतीय अपनी इस शिक्षा प्रणाली को सर्वथा भूल चुके थे और शताब्दियों और सहस्त्राब्दियों से यह शिक्षा प्रणाली विलुप्त हो चुकी थी। ऋषि दयानन्द ने प्राचीन भारतीय साहित्य का मन्थन करके फिर से इस शिक्षा प्रणाली का बलपूर्वक प्रतिपादन किया और इसके महत्त्व को जनता के सन्मुख रखा। इस दृष्टि से गुरुकुल शिक्षा प्रणाली नवीन शिक्षा प्रणाली है। ऋषि दयानन्द ने जहाँ धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक और दार्शनिक आदि विषयों का विवेचन करते हुए इन विषयों में प्राचीन शास्त्रों के आधार पर सर्वथा मौलिक विचार दिये हैं वहाँ अपनी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का प्रतिपादन करते हुए शिक्षा के क्षेत्र में भी बिल्कुल नये विचार दिये हैं। उन्हीं विचारों से अनुप्राणित होकर स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी की स्थापना की थी। ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश में जो कुछ विस्तार से कहा है उसे संक्षेप से निम्न नौ सूत्रों में बांधा जा सकता है गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की यह नवसूत्री इस प्रकार है।

१. ग्रामाद्बहिर्वास— शिक्षा संस्थायें गांवों और शहरों से बाहर होनी चाहिये। आजकल की भांति शिक्षा संस्थायें नगरों के बीच में, गली—मुहल्लों में ही नहीं होनी चाहिये। शहरों की गन्दी हवा, गाली गलौच, सिनेमा थियेटर और गृहस्थी के विलासपूर्ण जीवन से परे सुन्दर प्राकृतिक परिस्थितियों में हमारी शिक्षा संस्थायें होनी चाहिये। जहाँ बच्चे पूर्ण शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य प्राप्त कर सकें और इन तीनों दृष्टियों से समुन्नत हो सकें। ऋषि ने तो यहाँ तक लिखा है कि हमारी शिक्षा संस्थाएँ नगरों में कम से कम पाँच कोस दूर होनी चाहिए।

२. गुरुशिष्ययोः सामीप्यम्— गुरु और शिष्य को एक साथ रहना चाहिये। आज कल की भांति यह नहीं होना चाहिये कि विद्यालय में पढ़ाई के समय तो छात्र और अध्यापक एकत्र होते हैं, पढ़ाई के पश्चात् छात्र नगर में कहीं चले जाते हैं और अध्यापक कहीं। गुरु और शिष्य दोनों को शिक्षणालय के क्षेत्र में ही निवास करना चाहिये जिससे गुरु लोग अपने छात्रों की प्रत्येक गतिविधि पर ध्यान रख सकें और उनका मार्ग प्रदर्शन कर सकें और छात्रों को जब कोई कठिनाई उपस्थित हो तो वे अपने गुरुओं के पास जाकर उसका समाधान प्राप्त कर सकें। वेद के ब्रह्मचर्य सूक्त में लिखा है कि जैसे माता के गर्भ में पड़े हुए बच्चे पर बाहरी दुनियाँ के कोई प्रभाव नहीं पड़ने पाते, केवल माता का ही प्रभाव उस पर पड़ता है, उसी प्रकार छात्र अपने गुरुओं के पास ही रहने चाहिये। नगरों के दूषित प्रभाव उन पर नहीं पड़ने चाहिये। अपने गुरुओं के अच्छे प्रभाव ही उन पर पड़ने चाहिये। संस्कृत में शिष्य का एक नाम ही अन्तेवासी होता है जिसका अर्थ होता है गुरु के पास रहने वाला। इसीलिये प्राचीन भारत में शिक्षणालयों को गुरुकुल कहा जाता था।

३. छात्राणां जीवने समानता— गुरुकुल में पढ़ने और रहने वाले छात्रों का जीवन व्यवहार एक समान होना चाहिये। सबके वस्त्र, सबका खान और पान एक समान होना चाहिये। उनके रहन—सहन में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिये। ऋषि ने लिखा है कि चाहे कोई राजा का पुत्र हो और चाहे रंक का, गुरुकुल में सबको एक समान रहना चाहिये।

४. ब्रह्मचर्य तपोनुष्ठानञ्च— जब तक विद्याकाल समाप्त नहीं होता तब तक विद्यार्थियों को ब्रह्मचारी रहना चाहिये। उन्हें संयमपूर्ण अविवाहित जीवन व्यतीत करते हुए पूर्ण मनोयोग से विद्याध्ययन करना चाहिये और अपनी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति करने में ही तत्पर रहना चाहिये। विद्यार्थीकाल में छात्रों का वाग्दान या सगाई तक भी नहीं होनी चाहिए। ब्रह्मचर्य साधन में सहायता के लिये विद्यार्थियों का जीवन तपस्वी होना चाहिए। विद्यार्थियों के जीवन में किसी प्रकार का बनाव ठनाव और साज शृंगार नहीं होना चाहिये। उनका सब रहन—सहन और भोजन छायन सवर्था सात्विक, सरल और अत्यन्त सादा होना चाहिये। इसके साथ ही उनके जीवन में कष्ट सहिष्णुता और गर्मी—सर्दी आदि के द्वन्द्वों को सहने का अभ्यास होना चाहिये। यह तपस्वी जीवन के अन्तर्गत है। तपस्वी विद्यार्थी ही ब्रह्मचारी और विद्वान् बन सकता है।

५. बालक बालिकानां सहशिक्षा प्रतिषेधः— लड़के और लड़कियों की शिक्षा एकत्र नहीं होनी चाहिये। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ब्रह्मचर्य प्रधान शिक्षा प्रणाली है इसलिए इसमें उन सब बातों का विद्यार्थी जीवन से अलग रखने का प्रयत्न किया जाता है जो ब्रह्मचर्य पालन में बाधा उपस्थित करने वाली हैं। इसलिये सहशिक्षा का गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में बिल्कुल स्थान नहीं है। बालक और बालिकाओं के गुरुकुल पृथक—पृथक होने चाहिए। ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि बालक और बालिकाओं की पाठशाला एक दूसरे से कम से कम पांच कोस दूर रहनी चाहिये।

६. मातृभाषया शिक्षादानम्— बालकों की शिक्षा उनकी मातृभाषा के द्वारा होनी चाहिये। जो भाषा बच्चों ने माता के दूध के साथ बचपन में नहीं सीखी है वह भाषा उनकी शिक्षा का माध्यम नहीं बनाई जानी चाहिये। ऐसा न करने की अवस्था में बच्चों का बहुत अधिक परिश्रम भाषा सीखने और घोटने में लगता है, विषय ज्ञान उन्हें बहुत कम होता है। इसलिए बालकों की शिक्षा का माध्यम उनकी मातृभाषा होनी चाहिये।

७. श्रुतेस्तदनुकूल धर्मशास्त्राणामवश्यम्पाठ्यता— भारतीय आर्य सभ्यता कर्म प्रधान सभ्यता है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली भारतीय सभ्यता की ही महत्त्वपूर्ण उपज है। इसलिए इस शिक्षा प्रणाली में धार्मिक शिक्षा एक आवश्यक अंग के रूप में रहती है। ऋषि दयानन्द ने अपनी पाठ प्रणाली में, वेद, उपनिषद्, दर्शन आदि धार्मिक साहित्य का पठन—पाठन आवश्यक रखा है और इन ग्रन्थों में प्रतिपादित ईश्वरोपासनादि विधियों का अनुष्ठान भी गुरुओं और छात्रों के लिये आवश्यक रखा है। इन ग्रन्थों में सच्चे धर्मतत्त्व का प्रतिपादन है और उस धर्मतत्त्व को जाने बिना किसी विद्यार्थी की शिक्षा पूरी नहीं हो सकती।

८. पाश्चात्य पौर्वात्योमयविद्या विज्ञानानां पठनीयता— नवीन और प्राचीन दोनों प्रकार की विद्याएँ पढ़नी चाहिए। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में किसी भी प्रकार के ज्ञान और विज्ञान को एक देश ही नहीं समझा जाता उसे सार्वभौम समझा जाता है। सब ज्ञान विज्ञान सारी मनुष्य जाति का सांझा है। एक देश और जाति के लोगों ने जो सत्य पता लगाया है, जिस ज्ञान विज्ञान का आविष्कार किया है, उसका सर्वत्र प्रचार होना चाहिए। उसे सभी लोगों को जानना चाहिए। प्राचीन भारतीयों ने अनेक सच्चाईयों को वैज्ञानिक तथ्यों पर आविष्कार किया है। ये सभी सत्य, सभी ज्ञान—विज्ञान धरती के सभी लोगों को जानने चाहिए। इसलिये हमारी शिक्षा प्रणाली में पूर्वी और पश्चिमी दोनों ओर के विद्या विज्ञानों का समावेश होना चाहिये। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में जहाँ प्राचीन भारतीय विद्याओं के पढ़ने पर बल दिया है वहाँ आधुनिक विद्याओं के पढ़ने पर भी स्पष्ट जोर दिया है। इस प्रकार पौर्वात्य और पाश्चात्य विद्याओं का समन्वय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की खास विशेषता है।

९. शिक्षाया निःशुल्कत्वम्— विद्यार्थियों को सब प्रकार की शिक्षा निःशुल्क मिलनी चाहिये। ऋषि ने तो यहाँ तक लिखा है कि छात्रों को भोजन वस्त्र भी निःशुल्क मिलने चाहिये। प्राचीन समय में भारतीय लोगों ने इसका उपाय यह किया था कि विद्यार्थीगण अपने गुरुकुल के पास के नगर में जाकर अपने लिये और अपने गुरुओं के लिये भोजन की भिक्षा मांग कर लाते थे और आवश्यकता के समय वस्त्र भी मांग लाते थे। अन्य खर्चों के लिये धनी लोगों और राज्य से सहायता मिलती रहती थी। चाहे समाज व्यवस्था करे और चाहे राज्य, व्यवस्था यह होनी चाहिये कि विद्यार्थियों को अच्छी से अच्छी शिक्षा और भोजन वस्त्रादि सब निःशुल्क मिलने चाहिए। विद्या बिकनी नहीं चाहिए, गरीब से गरीब बालक को भी ऊँची से ऊँची शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा होनी चाहिये। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में एक विशिष्ट प्रकार के साम्यवादी तत्व को स्वीकार किया है और यह साम्यवाद विशुद्ध भारतीय है।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के ये नौ सूत्र प्रधान हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने इन सूत्रों के अनुसार देश के बालकों को शिक्षा देने के लिये हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना करके देश एवं समाज ही नहीं अपितु पूरे विश्व के सामने अप्रतिम कार्य करके दिखाया है।

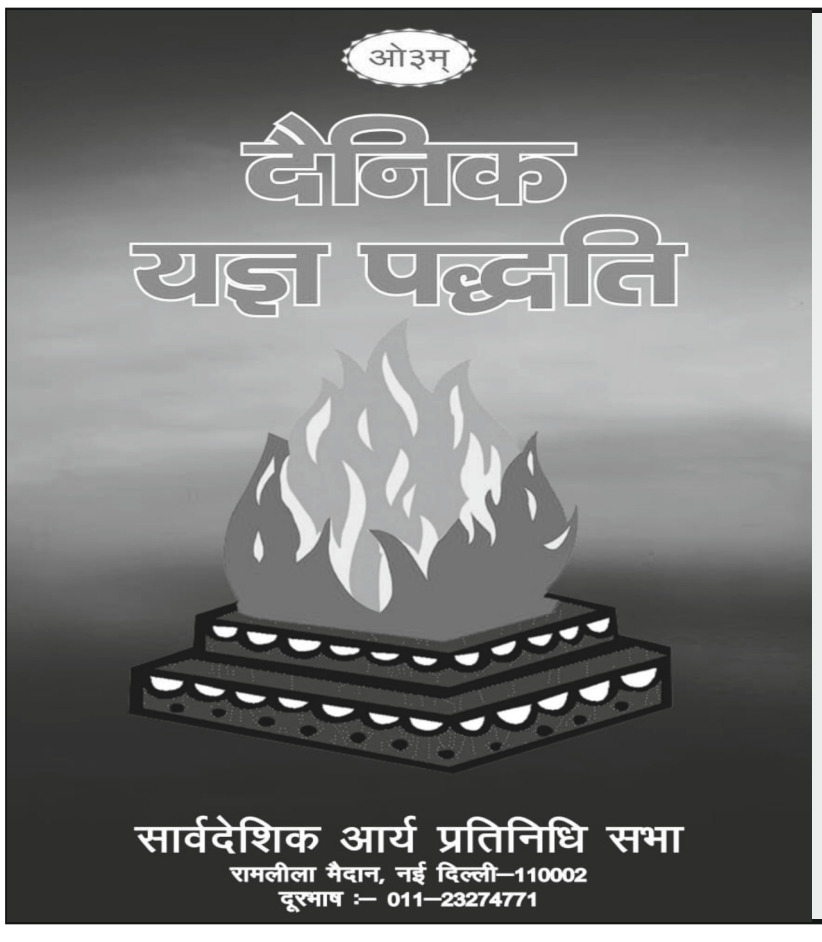

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/— रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान — सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली—2
दूरभाष :—011—23274771, 011—42415359
मो.:—8218863689

15 नवम्बर, पुण्यतिथि पर विशेष

राष्ट्र की अनुपम विभूति महात्मा हंसराज

– प्रो. चन्द्रप्रकाश आर्य

पंचतंत्र में कहा गया है कि जिसके जीने से बहुत से व्यक्तियों को जीवन मिलता है, उसी का जीना धन्य है। अन्यथा अपने लिए तो कौए भी जीते हैं, चोंच मारकर अपना पेट भरते हैं।

यस्मिन् जीवन्ति बहव सोज्जजीवतु।
वयांसि किं न कुर्वन्ति चत्वा स्वोदरर्णम्।।

महात्मा हंसराज ऐसे ही व्यक्ति थे। उन्होंने अपनी आयु के 74 वर्षों में से लगभग 38 वर्ष समाज कल्याण तथा परोपकार के लिए लगाए। 19 अप्रैल 1865 को पंजाब में होश्यारपुर के निकट बजवाड़ा ग्राम में उनका जन्म और 15 नवम्बर, 1938 को लाहौर में देहांत हुआ।

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में आर्य समाज और डी. ए. वी. कालेज लाहौर का महत्वपूर्ण योगदान था, परन्तु यह बहुत कम लोगों को ज्ञात है कि उसके पहले प्रिंसिपल महात्मा हंसराज थे। जिन्होंने 1885 से 1912 तक डी. ए. वी. कॉलेज (लाहौर) की अवैतनिक सेवा की। उन दिनों सन् 1883 तक शिक्षण संस्थाओं पर अंग्रेजों या विदेशी ईसाइयों का नियंत्रण था। 222 शिक्षा केन्द्रों में 91 कॉलेज और स्कूल थे, उनमें चौंसठ हजार छात्र उस वक्त पढ़ते थे, किन्तु इनमें एक भी संस्था का प्रधानाचार्य या प्रिंसिपल भारतीय नहीं था। महात्मा हंसराज पहले भारतीय थे, जो पहले डी. ए. वी. स्कूल और बाद में डी. ए. वी. कॉलेज (लाहौर) के प्रिंसिपल बने। उन्होंने उस युग में देश में शिक्षा के प्रसार के लिए, उसमें राष्ट्रीयता की भावना भरने के लिए केवल अपना व्यक्तिगत सुख त्याग दिया अपितु पारिवारिक जनों के लिए भी आर्थिक संकटों का रास्ता खोल दिया।

उन्होंने सन् 1885 में लाहौर से प्रथम श्रेणी में बी. ए. पास कर पंजाब में धूम मचा दी थी। उन दिनों प्रथम श्रेणी में बी. ए. करना आजकल के आई. ए. एस. बनने के समकक्ष था। वे चाहते तो अपने समकालीन मित्र राजा नरेन्द्रनाथ की तरह डिप्टी कमिश्नर बन सकते थे। फिर उनकी घर की परिस्थितियां भी बड़ी विकट थीं। 11-12 वर्ष की आयु में ही इनके पिता का देहान्त हो गया था। आय का कोई स्रोत नहीं था, फिर उसी वर्ष इनका विवाह हो गया। इन विकट आर्थिक परिस्थितियों में प्रथम श्रेणी में बी. ए. करके भी उन्होंने घर परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने की बजाय माता, पत्नी तथा परिवारजनों को सुख देने की अपेक्षा अपने तप, त्याग एवं अवैतनिक सेवा द्वारा उल्टे उनको आर्थिक संकट की ओर धकेल दिया। महर्षि दयानन्द के बलिदान और आर्य समाज की आंधी से प्रभावित होकर तथा अपने जीवन को सेवा और गरीबी में झोंक दिया। 26 वर्ष पर्यन्त परिवार के सात सदस्यों को भी इस आर्थिक तंगी की भट्टी में तपाया।

महात्मा जी ने पूरा जीवन अवैतनिक डी. ए. वी. कालेज को सौंप दिया। जीवन निर्वाह के लिए कालेज से तो एक पैसा भी स्वीकार नहीं किया तो फिर परिवार का गुजारा कैसे हो? इस बारे में उनके बड़े भाई मुल्खराज ने निर्वाह का भार अपने ऊपर लिया। उनकी बैंक की नोकरी से 80 रुपये महीना मिलता था, उसमें से चालीस रुपये प्रतिमास वे हंसराज के परिवार को पोषण के लिए देने लगे।

पहनने के लिए एक पुराना कोट, पुरानी पगड़ी तथा पुराना जूता उनके पास होता था। तख्त के ऊपर एक कम्बल बिछाते थे। इस स्वेच्छारोपित आर्थिक संकट में उपहार स्वरूप भी यदि कुछ मिलता तो वे उसे भी कॉलेज को जमा करा देते। यहां तक कि अपने पुत्र बलराज ने क्रांतिकारियों से सम्पर्क के कारण सात साल कैद भी तथा कालेपानी की सजा हुई। उनके मुकदमें की पैरवी के लिए उनके मित्रों तथा शुभचिन्तकों ने हजारों रुपये इकट्ठे किये, किन्तु महात्मा हंसराज जी ने उसे स्वीकार नहीं किया। आर्य शुचिता की यह अनुपम मिसाल है। डी. ए. वी. कॉलेज के प्रिंसिपल होकर भी किराये के मकान में रहते थे। 40 रुपये में वे घर के आठ सदस्यों का निर्वाह करते थे, और ये 40 रुपये भी बड़े भाई मुल्कराज प्रतिमास देते थे।

एक समय ऐसा भी आया कि उन पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा। छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति। बड़े पुत्र बलराज पर राजद्रोह का मुकदमा चला और सात साल की सजा हुई। जैसे कि ऊपर बताया जा चुका है। बड़े भाई मुल्काराज का बैंक टूट गया, उनकी नौकरी छूट गई। अब 40 रुपये की मासिक आर्थिक सहायता भी बन्द हो गई। दोनों परिवारों में भयंकर आर्थिक संकट छा गया। इन विकट परिस्थितियों में पत्नी का देहान्त हो गया फिर भी महात्मा हंसराज अपने पथ से विचलित नहीं हुए। उन्होंने अपने तप, त्याग, सेवा और अपरिग्रह के व्रत को पूरी तरह निभाया। उनकी चार पुत्रियां भी थीं फिर भी किसी से कुछ भी उन्होंने स्वीकार नहीं किया। क्या अपरिग्रह,

आर्थिकशुचिता, ईमानदारी की यह पराकाष्ठा नहीं है?

मैंने राजा हरिश्चन्द्र की कथा पढ़ी है जिसमें उन्होंने ऋषि विश्वामित्र की दक्षिणा चुकाने के लिए अपनी पत्नी तथा पुत्र को चांडाल के हाथ बेच दिया था। दूसरी कथा महाभारत में युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के प्रसंग में एक गृहस्थ दम्पति की आती है, जिसमें उन्होंने स्वयं तीन दिन तक भूखे रहकर आने वाले अतिथियों को अन्न दान दिया। भोजन कराया और जब भोजन किया तब भी एक भूखे अतिथि को पहले खिलाकर बाद में स्वयं भोजन किया और कहते हैं कि एक नेवला उनके इस महादान से पवित्र हो गया, स्वर्णिम हो गया। महाभारत की कहानी के पीछे जो आर्थिक पवित्रता की भावना है, वह युगों पहले की बात है, परन्तु महात्मा हंसराज तो इसी युग में, इसी शताब्दी में थे। उन्होंने तो 25-26 साल तक कॉलेज के प्रिंसिपल रहते हुए भी स्वयं को तथा अपने समेत आठ सदस्यों के परिवार को गरीबी, अभाव और आर्थिक संकटों की आग में झोंक दिया। आज के युग में ऐसे अपरिग्रह, आर्थिक त्याग, वित्तैषणा के त्याग का उदाहरण मिलना कठिन है।

आज देश में हजारों कॉलेज हैं, विश्वविद्यालय हैं और लाखों से अधिक शिक्षक पढ़ा रहे हैं आज उनको यू. जी. सी. अथवा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार नए वेतनमान भी मिल गए हैं। कहते हैं कि इनके नए ग्रेड/वेतनमान आई. ए. एस. अफसरों के समकक्ष हैं। एक प्रारम्भिक प्रवक्ता को आठ-दस हजार से कम नहीं मिलते। ऊपर तो 20 से 30 हजार तक रुपये प्रतिमास बड़े प्रोफेसरों को मिलते हैं। उधर कॉलेजों में साल में छह महीने छुट्टियां रहती हैं फिर भी उनमें, कॉलेज अध्यापकों में आर्थिक शुचिता, आर्थिक ईमानदारी या आर्थिक सन्तोष नहीं है। अपने कर्तव्य के प्रति पूरी निष्ठा नहीं है। इतने बड़े वेतन प्राप्त करने के बावजूद कॉलेजों के शिक्षक भारी मात्रा में ट्यूशन करते हैं, बड़े-बड़े कोचिंग केन्द्रों से जुड़े रहते हैं। स्कूलों खासकर पब्लिक स्कूलों में भी ट्यूशनों की होड़ मची हुई है। कहीं भी आर्थिकशुचिता, आर्थिक ईमानदारी दिखाई नहीं देती।

शिक्षकों से हटकर देश के नेताओं की ओर ध्यान दें तो वे आर्थिक भ्रष्टाचार में कंठ तक डूबे हुए हैं। बोफोर्स तोप कांड और उसके बाद कितने ही आर्थिक घोटाले हो चुके हैं। चारों ओर राजनेताओं का भ्रष्टाचार, राजनेताओं पर भ्रष्टाचार के आरोप सुनाई पड़ते हैं। देश में आर्थिक ईमानदारी कहां है? नेताओं में आर्थिक शुचिता, आर्थिक शुद्धता कहां है? जबकि मनु ने मनुस्मृति में सब प्रकार की शुद्धताओं/पवित्रताओं में आर्थिक शुद्धता को सबसे बड़ा माना है। जिस मनुष्य का धन शुद्ध है, वही पवित्र है। जल और मिट्टी से ही, केवल शुद्धि नहीं होती - सर्वेषामेव शौखनामर्थशौचं परं स्मतृम्। योऽर्थे शुचिर्हि स शुचिर्नमृद्वारिशुचिः।।मनु. 6/106

आज देश को इसी प्रकार की आर्थिक शुचिता, धन की पवित्रता, आर्थिक ईमानदारी की आवश्यकता है। महात्मा हंसराज इसके उदाहरण हैं। देश के नेताओं तथा शिक्षकों को उनसे प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए। वे राष्ट्रीय अनुपम विभूति हैं। उनका तप, त्याग एवं अपरिग्रह अनुकरणीय है।

कॉलेज से सेवा निवृत्त होने के बाद भी उन्होंने 1912 से अपने जीवन के अगले 26 वर्ष समाज सेवा और त्याग का जीवन बिताया वे धर्म, देश तथा जाति की सेवा करते रहे। सेवानिवृत्त होकर भी वे निष्क्रिय नहीं बैठे और न ही अन्यत्र सेवा करके धन कमाने का यत्न किया। जैसा कि आजकल लोग किया करते हैं। उनके द्वारा पीड़ितों, दुखियों एवं असहायों के लिए किए गए सेवा कार्य भी चिरस्मरणीय हैं। जब राजस्थान, अवध, गढ़वाल, उड़ीसा, शिमला, कांगड़ा और जम्मू में अकाल पड़ा, तो उन्होंने हजारों लोगों को बचाया तथा अन्न, जल, वस्त्र तथा अन्य वस्तुएं इकट्ठी कर उनकी सेवा की। आगरा, भरतपुर और मथुरा के मुसलमान मलकाने राजपूतों की शुद्धि में भी उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया। ग्रीष्म ऋतु की तपती धूप में तीन मास तक उन्होंने पद्यात्रा की। इस कारण उनका शरीर निर्बल हो गया और एक आंख भी जाती रही, परन्तु वे सेवा कार्य में लगे रहे। 15 नवम्बर, 1938 में उनका निधन हुआ।

आज हम उनके तप, त्याग और बलिदान को भूल गए हैं। प्रत्येक स्कूल और कॉलेज को उनके बलिदान को याद करना चाहिए। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा को इस अवसर पर राष्ट्रीय समाचार पत्रों में उनकी सेवाओं के बारे में विज्ञापन एवं सूचनाएं, प्रचारित करनी चाहिए ताकि देश की जनता देश के नेता, देश के शिक्षक, देश के विद्यार्थी उनसे कुछ सीख सकें। इसी में देश का, राष्ट्र का कल्याण है।

- 432/8 आर्य निवास, करनाल (हरियाणा)

सत्य सनातन वैदिक धर्म सम्मेलन का कार्यक्रम दिनांक 6 नवम्बर, 2022 रविवार को रेलवे वर्कशॉप रोड, जगाधरी स्थित वैदिक ज्ञान आश्रम में हुआ सम्पन्न

आर्य समाज के अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय वैदिक विद्वानों ने दिया वैदिक धर्म को जन-जन तक पहुंचाने का प्रेरक संदेश

वैदिक धर्म ही सत्य सनातन धर्म है – स्वामी आर्यवेश

वैदिक धर्म को जन-जन तक फैलाना मेरा कर्त्तव्य है – स्वामी सच्चिदानन्द

अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने का संकल्प लें आर्यजन – स्वामी आदित्यवेश

यज्ञ, योग से ही वैदिक संस्कृति, वैदिक सभ्यता व वैदिक संस्कार को जीवंत रखा जा सकता है – डॉ. जयदीप आर्य

वैदिक ज्ञान आश्रम यमुनानगर द्वारा आर्य केंद्रीय सभा व केंद्रीय आर्य युवक परिषद् के सहयोग से दिनांक 6 नवम्बर, 2022 रविवार को वैदिक ज्ञान आश्रम के संस्थापक एवं आर्य संन्यासी स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती जी के सानिध्य में सत्य सनातन वैदिक धर्म सम्मेलन अमन पैलेस रेलवे वर्कशॉप रोड, जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा में सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। इस सम्मेलन में विशेष रूप से आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय संन्यासी पूज्य स्वामी आर्यवेश जी महाराज, तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, हरियाणा योग आयोग के अध्यक्ष डॉ. जयदीप आर्य जी, वयोवृद्ध विद्वान् श्री लाजपत राय चौधरी, सेवानिवृत्त औषधि नियंत्रक हरियाणा सरकार एवं केंद्रीय आर्य युवक परिषद् के हरियाणा राज्य प्रमुख डॉ. नरेंद्र आहूजा जी 'विवेक', सत्यार्थ ग्रुप ऑफ़ इंडिया के अध्यक्ष श्री सौरभ आर्य, हरियाणा नशा विरोधी के प्रतिनिधि पुलिस अधिकारी श्री अशोक वर्मा, ओजस्वी कवित्री श्रीमती कांता वर्मा, श्रीमती अंजू आर्या, वानप्रस्था संतोष यती, श्री मनोज शास्त्री व श्रीमती श्वेता आर्या आर्य समाज मॉडल टाऊन, अम्बाला आदि विद्वान् एवं संन्यासी सम्मिलित हुए।

स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में आयोजित हुए इस महासम्मेलन में वैदिक यज्ञ, वैदिक शिक्षा, वैदिक सभ्यता व वैदिक संस्कारों पर विद्वानों के प्रभावशाली प्रवचन हुए। आर्य समाज के अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय वैदिक विद्वानों ने आध्यात्मिक प्रवचन, भजन उपदेश, व्याख्यान के माध्यम से वैदिक धर्म को जन–जन तक पहुंचाने का प्रेरक संदेश दिया। महासम्मेलन का शुभारंभ सामूहिक वैदिक यज्ञ के साथ किया गया जिसमें आर्य समाज के वैदिक विद्वान पुरोहित आचार्य धर्मेंद्र शास्त्री जी ने यज्ञ ब्रह्मा के रूप में यज्ञ कराया। महासम्मेलन का संचालन आर्या नीरज नरूला द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि वैदिक धर्म सबसे प्राचीन सत्य पर आधारित, सर्वश्रेष्ठ व सर्वोत्तम है जो सर्वदा हमें वैदिक यज्ञ, वैदिक संस्कृति, वैदिक सभ्यता व वैदिक संस्कारों से जुड़ने के लिए प्रेरित करता रहा है, इसलिए हम सभी को चाहिए कि हम अज्ञान, अंधविश्वास, दिखावा, पाखंड व आडम्बर को छोड़कर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सुंदर संदेश को ग्रहण करते हुए अपने जीवन को सत्य सनातन वैदिक धर्म से जोड़ें तभी हम अपने जीवन को संस्कारवान, प्रतिभावान व आदर्श बना सकते हैं। स्वामी जी ने कहा कि हम सबको मिलकर स्वामी दयानन्द जी द्वारा दिखाये गये रास्ते पर चलते हुए संसार के उपकार की भावना से कार्य करना चाहिए। वर्तमान समय में आर्य समाज की और अधिक आवश्यकता बढ़ गई है। हम सबको स्वामी दयानन्द तथा आर्य समाज द्वारा किये गये अनुपम कार्यों को प्रचारित एवं प्रसारित करने की आवश्यकता है। आर्य समाज ने अतीत में जो परोपकार के कार्य किये उन्हीं से प्रेरणा लेकर वर्तमान समय की ज्वलन्त समस्याओं के विरुद्ध राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्य समाज को अभियान चलाना चाहिए। इसी से आर्य समाज की ओर आम आदमी आकृष्ट होगा और आर्य समाज का संगठन और अधिक सशक्त बनेगा। स्वामी जी ने आर्य समाज की राष्ट्रीय आन्दोलन में ऐतिहासिक भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 1857 की क्रांति और उसके पश्चात् चलाये गये स्वतंत्रता आन्दोलन में स्वामी विरजानन्द, महर्षि दयानन्द व उनके हजारों अनुयायियों तथा बलिदानियों का सबसे अधिक योगदान रहा है किन्तु विडम्बना की बात है कि इतिहास के इन स्वर्णिम तथ्यों को नजरअंदाज किया जा रहा है और सरकार के द्वारा चलाये जा रहे अमृत महोत्सव कार्यक्रमों में महर्षि दयानन्द तथा उनके अनुयायियों और आर्य समाज का कहीं कोई चर्चा करने को तैयार नहीं है। इसलिए आर्य समाज के नौजवानों को कमर कसकर अपने पूर्वजों द्वारा दिये गये बलिदान एवं योगदान को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य स्वयं करना चाहिए। वर्ष 2024 में स्वामी दयानन्द जी के दूसरी जन्मशती के उपलक्ष्य में एक ठोस कार्य योजना तैयार करके कार्य करना चाहिए जिसमें सैकड़ों नये संन्यासियों एवं वानप्रस्थियों की दीक्षा, लाखों युवाओं को आर्य समाज का सदस्य बनाना, पाखण्ड, अन्धविश्वास, नशाखोरी, जातिवाद आदि कुरीतियों के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चलाना, भारत के प्रत्येक प्रान्त में आर्य समाज के संगठन की इकाई खड़ा करना आदि मुख्य गतिविधियाँ हो सकती हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने दुनिया के समस्त मत–सम्प्रदायों को मनुष्य द्वारा खड़े किये गये सम्प्रदाय बताया। उन्होंने कहा कि धर्म एक ही है और वह सृष्टि के प्रारम्भ में परमपिता परमात्मा द्वारा दिये गये वेद ज्ञान के आधार पर वैदिक धर्म ही है। इस विचार पर अधिक से अधिक संवाद एवं चर्चा करनी चाहिए।

मिशन आर्यवर्त के निदेशक एवं गुरुकुल धीरणवास के प्रधान तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आर्य समाज एक अनुपम चिन्तन का मंच है, जो वैदिक सिद्धांतों, तथ्यों व प्रमाणों पर शिक्षित करने का कार्य करता आ रहा है। इसलिए विशेष रूप से सभी को चाहिए कि वह अपने–अपने परिवारों को वैदिक विचारधारा से जोड़ने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहें और समाज व देश में फैलने वाली कुरीतियों का विरोध अनिवार्य रूप से करें। समाज में होने वाले प्रत्येक प्रकार के अन्याय का आर्य लोग डटकर विरोध करें। किसी भी राष्ट्र को आदर्श राष्ट्र बनाने के लिए अपने परिवार एवं समाज को जागरूक करके ही किया जा सकता है।

हरियाणा योग आयोग के चेयरमैन एवं पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के मुख्य केन्द्रीय प्रभारी डॉ. जयदीप आर्य ने कहा कि यज्ञ एवं योग से ही वैदिक संस्कृति, वैदिक सभ्यता व वैदिक संस्कार को जीवन्त रखा जा सकता है, इसलिए सभी अभिभावकों को चाहिए कि वह बाल्यकाल से ही बच्चों को वैदिक यज्ञ एवं योग से जोड़कर संस्कारित शिक्षा देने में अपनी अहम भूमिका निभायें।

सत्यार्थ ग्रुप ऑफ़ इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय सम्मान में मानद उपाधियों से विभूषित गोल्ड मेडलिस्ट आर्य रत्न डॉ. सौरभ आर्य ने कहा कि युवाओं पर पश्चिमी सभ्यता का हावी होना और अभिनेताओं को अपना आदर्श मानना गंभीर चिंता का विषय है।

सेवानिवृत्त औषधि नियंत्रक हरियाणा सरकार एवं केंद्रीय आर्य युवक परिषद् के हरियाणा राज्य प्रमुख श्री नरेंद्र आहूजा जी 'विवेक' ने वैदिक शिक्षा, मानवता, इंसानियत, परोपकार, दान एवं विश्व पर अत्यंत गहनता पूर्वक प्रेरक व्याख्यान दिया और सभी को वैदिक सिद्धांतों के अनुरूप जीवन जीने के लिए प्रेरित किया।

हरियाणा नशा विरोधी अभियान से जुड़े पुलिस अधिकारी श्री अशोक वर्मा ने ड्रग्स की हानियों पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा सभी उपस्थित श्रोताओं एवं वक्ताओं को सामूहिक रूप से संकल्प दिलवाया कि वे नशामुक्त समाज के निर्माण में अपना पूरा योगदान देंगे।

अंतर्राष्ट्रीय कवित्री एवं महान शिक्षाविद डॉ कांता वर्मा ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रेरक जीवन पर ओजस्वी कविताएं एवं काव्य पाठ करते हुए रचनाएं प्रस्तुत की जिनकी सभी ने भूरि–भूरि सराहना की। सम्मेलन में भजनोपदेशक श्वेता आर्या व मनोज आर्य (अंबाला), सुदेश आर्या (जगाधरी), अंजू आहूजा (पंचकूला), माता संतोष यती (करनाल) ने सुंदर भजन प्रस्तुत किए। सम्मेलन में सरदार बूंदा सिंह, धर्मपाल धीमान, अतुल सचदेवा, राजवीर आर्य (शादीपुर), सतीश सोनी (रादौर), कमल शर्मा, चाहत सचदेवा, डॉ. देवकीनंदन वर्मा (नजीबाबाद), राजीव वर्मा वैदिक (हरिद्वार), लालू कुमार, सुदेश वर्मा (नजीबाबाद), मोहित आर्य (यमुनानगर), मीना, प्रीती, अमृत, पूनम, चाहत आदि मौजूद थे और सम्मेलन को सफल बनाने में अपनी अमूल्य सेवाएं दी। आर्य केन्द्रीय सभा जगाधारी, यमुनानगर के प्रधान श्री महेन्द्र सिंघल जी ने भी सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस सम्मेलन के सूत्रधार तपोनिष्ठ संन्यासी स्वामी सच्चिदानन्द जी महराज ने अन्त में सभी आगन्तुक विद्वानों एवं आर्यजनों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मेरा कर्त्तव्य वैदिक धर्म को जन–जन तक पहुँचाना है। इसी भावना से यह कार्यक्रम आयोजित किया गया है। आप सबने इसमें सम्मिलित होकर और अपना आर्थिक सहयोग देकर जो योगदान दिया है उसके लिए मैं आश्रम की ओर से आप सभी का धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। इस पूरे आयोजन का मंच संचालन विदुषी बहन आर्या नीरज नरूला ने भी बड़ी कुशलता के साथ कार्यक्रम को चलाया और सभी विद्वानों तथा विशिष्ट अतिथियों को विशेष सम्मान देते हुए उनका आभार जताया। कार्यक्रम पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इसके बाद प्रीति भोज की सुन्दर व्यवस्था थी जिसमें सभी ने भाग लिया।

गंगा स्नान के मेले पर गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल में वार्षिक समारोह एवं सामवेद पारायण यज्ञ का भव्य आयोजन दिनांक 6 से 8 नवम्बर, 2022 को सफलता के साथ हुआ सम्पन्न

धार्मिक पाखण्ड एवं नशाखोरी के विरुद्ध संकल्प लेने से ही जीवन सुखमय बनाया जा सकता है – स्वामी आर्यवेश

आत्म विश्वास एवं दृढ़ संकल्प से मनुष्य जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर सकता है – स्वामी आनन्दवेश

राष्ट्र की रक्षा के लिए युवा पीढ़ी को तैयार किया जाये – ठाकुर विक्रम सिंह

अन्याय को सहन करना महापाप है – स्वामी आदित्यवेश

प्रतिवर्ष की भांति गंगा स्नान मेले के अवसर पर गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर, उ. प्र. में दिनांक 6 से 8 नवम्बर, 2022 को विशाल वार्षिक समारोह तथा सामवेद पारायण यज्ञ आयोजित किया गया। गुरुकुल के संस्थापक प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी आनन्दवेश जी महाराज के सान्निध्य में आयोजित उक्त समारोह में आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, राष्ट्र निर्माण पार्टी के संस्थापक एवं आर्य समाज के प्रसिद्ध दानवीर ठा. विक्रम सिंह जी, तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, गुरुकुल नंगला मंदोड़ के आचार्य स्वामी विश्वानन्द जी, वैदिक विद्वान् स्वामी चन्द्रदेव जी आदि के अतिरिक्त प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क, श्री राजबीर आर्य एवं श्री हवा सिंह तूफान एवं श्रीमती सविता आर्या ने कार्यक्रम में सम्मिलित होकर अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम के दौरान तीनों दिन प्रातः एवं सायं यज्ञ का कार्यक्रम चलता रहा जिसमें विविध स्थानों से पधारे आर्य परिवारों ने यजमान बनकर अपनी आहुतियाँ प्रदान की।

स्वामी आनन्दवेश जी महाराज ने अपने प्रवचनों में यज्ञप्रेमी लोगों को प्रेरित किया कि वे दृढ़ संकल्प तथा आत्म विश्वास के बल पर जीवन का उद्देश्य प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन से हमें विपरीति परिस्थितियों में भी कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। अतः हम जीवन में कभी निराश न हों, बल्कि अन्तिम श्वांस तक महर्षि के मिशन के लिए कार्य करते रहें।

अपने ओजस्वी उद्‌बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने देश में नशाखोरी तथा धार्मिक अन्धविश्वास व पाखण्ड के विरुद्ध प्रचण्ड आन्दोलन शुरू करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि लाखों लोग गंगा में डुबकी लगाने के लिए आते हैं और पाखण्डी लोग उन्हें गंगा में डूबकी लगाकर पाप काटने के लिए प्रेरित करते हैं। यह पूरी तरह से अवैज्ञानिक, अवैदिक एवं पाखण्ड से ओत–प्रोत विचार है। जीवन में किये हुए कर्मों का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है। यह वेद का सिद्धान्त है। स्वामी जी ने गंगा स्नान के लिए पधारे हजारों लोगों को प्रेरणा दी कि यदि वे वास्वत में अपने पाप काटना चाहते हैं तो वे नशाखोरी, अन्धविश्वास एवं अन्य सामाजिक बुराईयों से बचने का संकल्प लें। यदि गंगा स्नान करने के बावजूद भी वे शराब, गांजा, अफीम एवं विविध मादक द्रव्यों का सेवन करते रहेंगे और अन्धविश्वास एवं पाखण्ड से ग्रस्त रहेंगे तो वे कभी भी जीवन में उठ नहीं सकते। उन्हें अपने पाप कर्मों का फल निश्चित ही भोगना पड़ेगा। अतः वे गंगा में स्नान करने के बाद यज्ञ में आहुति देकर बुराई छोड़ने का संकल्प लें।

आर्य समाज के भामाशाह प्रसिद्ध दानवीर ठा. विक्रम सिंह जी ने राष्ट्र की रक्षा के लिए युवाओं को प्रेरित करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आज हमारा राष्ट्र विभिन्न संकटों से गुजर रहा है। समाज में जातिवाद व साम्प्रदायिकता के आधार पर फूट डाली जा रही है और राष्ट्र को कमजोर किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में आर्य समाज को देशभक्त नवयुवक तैयार करने चाहिए और पूरे देश में राष्ट्र रक्षा का अभियान चलाना चाहिए।

युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के उस वाक्य को उद्धृत करते हुए कहा कि अन्याय को करने वाले से अन्याय को सहने वाला बड़ा पापी होता है। अपने ओजस्वी व्याख्यान में लोगों का आह्वान किया कि वे अन्याय एवं अधर्म के विरुद्ध संघर्ष करने का संकल्प लें। आज सबसे बड़ी समस्या यह है कि बुराई का विरोध करने के लिए लोग आगे नहीं आते। इससे समाज में बुराई निरन्तर बढ़ती जाती है और अच्छे लोग निराश हो जाते हैं। स्वामी आदित्यवेश जी ने धार्मिक क्षेत्र में पाखण्ड एवं अन्धविश्वास बढ़ाने वाले और स्वयं को भगवान कहने वाले रामपाल दास और राम–रहीम जैसे लोगों को पूरे समाज से बहिष्कृत करने की अपील की। उन्होंने कहा कि जो लोग बलातकार, हत्या, भ्रष्टाचार एवं अन्य समाज विरोधी कार्यों में संलिप्त पाये जाने के बाद अदालत के द्वारा दण्डित किये जा चुके हैं और आजीवन कारावास की सजा जिन्हें दी गई है उन्हें लोगों को बहकाने का अवसर देना, उनके कार्यक्रम सोशल मीडिया व अखबारों में प्रचारित–प्रसारित करवाना पूरी तरह से गलत है, अनैतिक है। अतः उनकी सभी गतिविधियों पर प्रतिबन्ध लगना चाहिए। स्वामी आदित्यवेश जी ने आर्य समाज के बलिदानी इतिहास का भी ओजस्वी शब्दों में वर्णन किया।

श्री सहदेव बेधड़क ने भी अपने भजनों से श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। गंगा स्नान के मेले पर लाखों लोग शुक्रताल में आते हैं और गुरुकुल महाविद्यालय के तत्वावधान में इस अवसर पर प्रतिवर्ष विशाल समारोह का आयोजन किया जाता है जिससे अनेक लोग शराब आदि बुराईयाँ छोड़ने का संकल्प भी प्रतिवर्ष लेते हैं। इस पूरे आयोजन में आचार्य देवपाल शास्त्री ने मंच का संचालन किया और अतिथियों के भोजन आदि की समुचित व्यवस्था श्री सोमवीर आर्य जी ने संभाला। कार्यक्रम अत्यन्त सफल एवं प्रभावशाली रहा।

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन – पृष्ठ 232 – मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन – पृष्ठ 248 – मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शन – पृष्ठ 240 – मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन – पृष्ठ 156 – मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि – पृष्ठ 278 – मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :–011–42415359, 23274771

पृष्ठ 1 का शेष **गुरुकुल यमुनातट मंझावली, फरीदाबाद, हरियाणा का रजत जयन्ती समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न**

होगा तभी जाकर आचार्य का यह लक्षण पूर्ण हो पायेगा।

दिल्ली पुरोहित सभा के प्रधान श्री प्रेमपाल शास्त्री जी ने बताया कि गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का प्रथम दायित्व होना चाहिए कि पाखण्ड का समूल नाश करें। महर्षि ने पाखण्ड के खण्डन के लिए आर्य समाज की पुनर्स्थापना की और यदि इस आर्य समाज के लोग ही पाखण्ड का अनुपालन करें तो यह अत्यन्त दुःखदायी होगा।

ओ३म् योग संस्थान के संस्थापक आचार्य ओम प्रकाश जी ने बताया कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति ही हमारी संस्कृति की रक्षक है। इस पद्धति का निरन्तर संरक्षण व संवर्धन हो, इसके लिए समाज ऐसे गुरुकुलों का सदैव सहयोग करें।

अन्त में इस उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष श्री मांमचन्द तंवर जी ने कार्यक्रम में उपस्थित समस्त महानुभावों का हार्दिक अभिनन्दन व स्वागत किया। इस सत्र के कार्यक्रम का संचालन गुरुकुल के स्नातक डॉ. रवीन्द्र कुमार जी ने किया।

उद्घाटन सम्मेलन के अन्त में रजत जयन्ती की स्मारिका का विद्वत्समुदाय द्वारा विमोचन किया गया, इस रजत–स्मारिका का सम्पादन डॉ. रवीन्द्र कुमार जी तथा श्री शिवदेव आर्य ने किया था।

मध्याह्न 2 बजे से वेद–विज्ञान सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ। इस सत्र में सर्वप्रथम गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने मंगलाचरण किया। प्रथम वक्ता के रूप में डॉ. बलवीर जी ने बताया कि वैदिक वाङ्मय में व्याप्त विज्ञान को गूढ़ तत्त्वों का प्रतिपादन किया।

राजस्थान के सीकर से सांसद स्वामी सुमेधनन्द जी ने बताया कि वर्तमान में स्कूल, कॉलेजों के अन्दर जिस विज्ञान की पाठ्य पुस्तकें पढ़ाई जा रही हैं, यथार्थ में वे विज्ञान का एक प्रतिशत भी नहीं है। विज्ञान का मूल तो हमारी परम्परा में निहित है। वेदों में एक–एक शब्द विज्ञान को अभिव्यक्त करता है।

रजत जयन्ती समारोह के लिए महामहिम उपराष्ट्रपति श्री जगदीश धनखड जी ने शुभकामना संदेश प्रेषित किया, जिसका डॉ. आनन्द कुमार जी ने वाचन किया।

वेद मर्मज्ञ आचार्या डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा जी ने बताया कि वेद ही तो विज्ञान को बताने वाले ग्रन्थ हैं, तृण से लेकर ईश्वर पर्यन्त का ज्ञान ही मुख्य विज्ञान है और इसमें भी आदि विज्ञान ईश्वर के ज्ञान ही है। वेदों के गूढ़ विज्ञान को महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में बताया है।

अमेरिका से पधारे आचार्य सतीश प्रकाश जी ने भारत के प्राचीन काल–खण्ड की विशेषताओं को बताते हुए ज्ञान–विज्ञान का सर्वोत्तम युग बताया।

आचार्य यज्ञवीर शास्त्री जी ने वेदों में व्याप्त विविध विज्ञान को विस्तार के साथ बताया। व्याकरण के आधार पर शब्दों के विज्ञान से साक्षात् विज्ञान का अवलोकन कराया।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य केन्द्रिय सभा के समस्त पदाधिकारियों ने पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी को सम्मानित किया।

इस वेद विज्ञान सम्मेलन के अध्यक्ष पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी ने पण्डित बुद्धदेव जी के एक संस्मरण का उल्लेख किया और कहा कि जब सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार मुम्बई की यात्रा कर रहे थे उस दौरान ट्रेन में यात्रा कर रहे पण्डित बुद्धदेव जी से पूछा कि क्या वेदों में विज्ञान है? तब पण्डित जी ने उत्तर दिया कि वेदों में क्या नहीं है? जो तुम इस विज्ञान की बात कर रहे हो, ये तो एक छोटा–सा विज्ञान है। परमात्मा का ज्ञान यदि वेद है तो यह ज्ञान तो अनन्त है। वेदों के ज्ञान–विज्ञान का विस्तार से विवेचन स्वामी जी ने किया और शतपथ ब्राह्मण के आधर पर विविध विज्ञान का स्पष्टीकरण किया। इस कार्यक्रम का संचालन गुरुकुल के स्नातक डॉ. अजीत कुमार जी ने किया।

रात्रिकालीन सत्र में कवि सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ। इस सम्मेलन में अनेक कवियों ने कविताओं की प्रस्तुति दी। इस सम्मेलन का संचालन राष्ट्रीय कवि डॉ. सारश्वत मोहन मनीषी जी ने किया।

8 अक्टूबर, 2022 को प्रातः यज्ञ के उपरान्त 10 बजे से सनातन संस्कृति रक्षा सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ। इस कार्यक्रम का संचालन गुरुकुल के स्नातक देवेश शास्त्री जी ने किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने वेदमन्त्रों द्वारा किया। प्रथम वक्ता के रूप में सुदर्शन टी.वी. के स्वामी श्री सुरेश चव्हाण जी ने राष्ट्र की रक्षा कैसे हो सकेगी, इस विषय का विस्तार से उल्लेख किया।

राष्ट्रनिर्माण पार्टी के अध्यक्ष डॉ. आनन्द कुमार जी ने बताया कि महर्षि दयानन्द ही एक ऐसे प्रथम महामानव थे जिन्होंने कुरान की समालोचना की। आज इस्लाम की समालोचना गुरुकुल के पढ़े हुए लोग ही कर सकते हैं।

प्रसिद्ध इस्लामिक स्कॉलर तैफुल चतुर्वेदी जी ने इस्लाम द्वारा चलायी जा रही कट्टरपंथी विचारधारा से अवगत कराकर इससे सावधान रहने के उपाय बताये तथा भारतीय इतिहास का अवलोकन कराया।

ठाकुर विक्रम सिंह जी ने कहा कि सनातन संस्कृति की रक्षा इन गुरुकुलों से ही सम्भव हो सकती है। राष्ट्र की रक्षा के लिए समाज को मजबूत बनाने की आवश्यकता है। आर्य समाज ने राजनीति को छोड़ दिया है तो देश का निर्माण कैसे सम्भव हो सकेगा? इसलिए आवश्यक है आर्य समाज को सक्रिय राजनीति में आना चाहिए।

व्यायाम सम्मेलन का शुभारम्भ सायं 4 बजे से हुआ। इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी ने किया। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने पदसंचलन, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, सर्वांगसुन्दर, तलवारबाजी, कलरी आदि व्यायामों का प्रदर्शन किया।

रात्रि कालीन सत्र में रात्रि 8 बजे ब्रह्मचारियों का बौद्धिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का संचालन गुरुकुल के स्नातक डॉ. शिव कुमार जी एवं श्री दीनबन्धु शास्त्री जी ने किया। इस कार्यक्रम में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने कविता, भजन, भाषण व नाटक आदि की प्रस्तुति दी। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने की।

9 अक्टूबर, 2022 को प्रातःकाल चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति हुई जिसमें सभी यजमानों को आशीर्वाद दिया गया। इस अवसर पर चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के ब्रह्मा सर्वश्री स्वामी देवव्रत सरस्वती, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री, आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक एवं स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी ने संक्षिप्त प्रवचन द्वारा यज्ञ प्रेमी जनता का मार्ग दर्शन किया।

यज्ञ के उपरान्त मध्याह्न 1 बजे से राष्ट्र–रक्षा सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ। इस कार्यक्रम का संचालन गुरुकुल के स्नातक श्री रामपाल शास्त्री जी ने किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने वेद मन्त्रों से किया। प्रथम वक्ता के रुप में हरियाणा सरकार के परिवहन मन्त्री श्री मूलचन्द शर्मा जी ने 11 लाख रुपये की राशि अनुदान स्वरूप देने की घोषणा की तथा सड़क निर्माण कराने का संकल्प लिया।

पूर्व दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष डॉ. योगानन्द शास्त्री जी ने इतिहास के पन्नों का अवलोकन कराया। उन्होंने कहा कि जैसे–जैसे भारत में वेदों की मान्यताओं का हनन हुआ है वैसे–वैसे ही भारत पर निरन्तर आक्रमण होते रहे हैं।

आचार्या कल्पना जी ने अपने वक्तव्य में संस्कृति की रक्षा के लिए संकल्प लेने का आह्वान किया।

हरियाणा संस्कृत अकादमी के सचिव श्री दिनेश चन्द शास्त्री जी ने बताया कि इतिहास गवाह है कि गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों ने किस प्रकार से राष्ट्र के लिए समाज में कार्य किया है, लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति के अनुसार भारत से संस्कृत को समाप्त करके ही भारत पर आधिपत्य स्थापित किया जा सकता है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति डॉ. रुपकिशोर शास्त्री जी ने कहा कि जो कार्य स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी ने 122 वर्ष पूर्व किया वही कार्य आज स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी कर रहे हैं।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के पूर्वकुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने बताया कि किसी भी राष्ट्र के निर्माण के दो प्रमुख तत्त्व होते हैं, जिनसे राष्ट्र की पहचान होती है – 1. एक बाहरी तत्त्व एवं 2. आन्तरिक तत्त्व। बहारी तत्व में भौगोलिक सीमाएं होती है तथा आन्तरिक तत्त्व में उसकी अपनी भाषा, संस्कृति, संविधान आदि होते हैं।

श्री कन्हैया लाल आर्य जी ने कहा कि यदि हम संस्कृत को जीवित रखना चाहते हैं तो हमें अगली जनगणना 2023 में अपनी मूल भाषा संस्कृत ही लिखवानी चाहिए।

पूर्व मंत्री एवं सांसद श्री डी. पी. यादव जी ने कहा कि यदि महर्षि दयानन्द सही समय पर नहीं आते तो शायद हम आज भी स्वतन्त्र नहीं हो पाते, क्योंकि जिस समय में अग्रेजी सत्ता के विरुद्ध में बोलना मात्र ही कानूनी अपराध माना जाता था, तब महर्षि दयानन्द ने 'अर्चन्ननु स्वराज्यम्' का उद्घोष करके स्वराज्य स्थापना के लिए वैचारिक क्रान्ति का कार्य महर्षि दयानन्द ने किया।

इस सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी महाराज ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में गुरुकुल के उन्नयन की कामना करते हुए बताया कि गुरुकुलों से ही राष्ट्र का निर्माण सम्भव है। गुरुकुल के ब्रह्मचारी ही देश को गौरवान्वित कर सकते हैं। स्वामी जी ने कहा कि आज हम सबको मिलकर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को आगे बढ़ाने में अपना तन–मन–धन से सहयोग करना चाहिए। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही देश एवं समाज का सर्वतोमुखी विकास हो सकता है। आज आवश्यकता है कि बच्चों को अधिक से अधिक संख्या में गुरुकुल में पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए। गुरुकुल को आकर्षक एवं आधुनिक बनाने की भी आवश्यकता है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में जहां शिक्षित एवं दीक्षित किया जाता है वहीं उच्च संस्कारों से भी सुसज्जित किया जाता है। सरकारों को चाहिए कि पूरे देश में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा दें तथा अपना भरपूर सहयोग प्रदान करें जिससे गुरुकुल शिक्षा पद्धति को पूरे देश में जन–जन तक पहुँचाया जा सके। स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी द्वारा संस्थापित गुरुकुलों की स्थापना कैसे हुई, इसका भी संक्षिप्त दिग्दर्शन कराया। उन्होंने कहा कि विद्वानों की निरन्तर कमी होती जा रही है, उसकी पूर्ति के लिए एक विशेष योजना बनानी चाहिए, जिसके माध्यम से वेद, दर्शन आदि के उद्भट विद्वानों का निर्माण कर शास्त्रार्थ के लिए तैयार किया जा सके। आज आर्य समाज को उपयोगी आर्य समाज बनाने की जरूरत है। इस उपयोगी आर्य समाज के माध्यम से आम जनता के दुःख–सुख में सहायक बनना चाहिए। स्वामी जी ने आर्य समाज के प्रचार–प्रसार करने वाले अनेक वीर बलिदानियों के कार्यों का भी उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि जिस प्रकार से स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य बलिदानियों का अद्वितीय योगदान रहा है, उसी प्रकार समाज सुधार एवं सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आर्य समाज ने प्रारम्भ से ही प्रचण्ड अभियान चलाया है। शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज की ऐतिहासिक भूमिका रही है और यदि यह कहा जाये कि आर्य समाज तथा गुरुकुल एक दूसरे के पूरक हैं तो अतिश्योंक्ति नहीं होगी। स्वामी जी ने आर्यों का आह्वान किया कि अब वह समय आ गया है जब हमें संगठित होकर अपने गुरुकुलों की रक्षा एवं संवर्धन तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं आर्य समाज के अस्तित्व एवं प्रतिष्ठा की सुरक्षा के लिए कमर कसकर कार्य करना होगा। हम किसी से इस बात की भीख मांगने की बजाय कि स्वामी दयानन्द और आर्य समाज का नाम लेकर उनकी प्रशस्ति करें, हम स्वयं इस कार्य को अपने दम पर करके दिखायें। सन् 2024 में जब हम महर्षि दयानन्द जी की दूसरी जन्मशती मनायेंगे तब हम पूरे देश और विदेश में महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की कीर्ति को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य कर सकें, यही हमारे लिए मुख्य कार्य होना चाहिए। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमें विविध गतिविधियों एवं प्रकल्पों के माध्यम से कार्य करने की योजना बनानी है। शीघ्र ही यह योजना तैयार हो जायेगी। मैं स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी तथा रजत जयन्ती समारोह की कार्यकारिणी को साधुवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने भयंकर वर्षा और प्राकृतिक आपदा के बावजूद समारोह को भव्यता के साथ सम्पन्न कराया है। इस समारोह को देखकर स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की वह घटना स्मरण हो रही है जब स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अमृतसर में कांग्रेस के अधिवेशन का दायित्व स्वागताध्यक्ष के रूप में अपने ऊपर लिया था और अधिवेशन की तारीख से दो दिन पूर्व भयंकर तूफान एवं वर्षा आ जाने से कांग्रेस अधिवेशन की सभी व्यवस्थाएँ, पण्डाल, भोजन की सामग्री एवं आवास आदि की व्यवस्था पूरी तरह से ध्वस्त हो गई थी, किन्तु स्वामी जी ने अमृतसर वासियों के दम पर अधिवेशन को पूरी तरह सफल करके दिखाया। आज स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज के मनोबल और संकल्प शक्ति को हमें दाद देनी चाहिए कि उन्होंने रजत जयन्ती समारोह की सारी व्यवस्थाएँ ध्वस्त हो जाने के बावजूद कार्यक्रम को न केवल जारी रखा बल्कि पूरी तरह से सफल करके दिखाया।

कार्यक्रम के अन्तिम दिवस समापन सत्र का समायोजन किया गया। इस सत्र का संचालन गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक डॉ. धर्मेन्द्र कुमार जी ने किया। गुरुकुल के ब्रह्मचारी देवव्रत ने एक भजन के माध्यम से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। अग्रिम भजन ग्वालियर से आये भजनोपदेशक श्री अशोक आर्य जी एवं ब्र. मुकेश आर्य जी ने प्रस्तुत किया। गुरुकुल के ही अध्यापक श्री आनन्द जी द्वारा लिखित तीन पुस्तकों का विमोचन विद्वत्समुदाय द्वारा किया गया।

गुरुकुल माऊण्ट आबू सिरोही, राजस्थान से आये आचार्य ओम प्रकाश जी ने कहा कि भारतीय संस्कृत की यदि कोई रक्षा कर रहा है तो वह संन्यासीगण व गुरुकुलों द्वारा हो रहा है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वेद विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. दीनदयाल जी ने कहा यदि समस्त समस्याओं का समाधान शेष पृष्ठ 7 पर

17 नवम्बर बलिदान दिवस पर विशेष

महान क्रांतिकारी लाला लाजपत राय

– मृत्युञ्जय दीक्षित

अंग्रेजी शासन का पुरजोर विरोध करने व अंग्रेजों के 'साइमन कमीशन' का विरोध करने वाले लोकप्रिय पंजाबी सपूत लाला लाजपतराय एक महान देश भक्त व ओजस्वी वक्ता थे। लाला लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी 1865 ई. में पंजाब के लुधियाना जिले के पास दुधिके ग्राम में हुआ था। उनकी शिक्षा दीक्षा लाहौर में हुई तथा सन् 1885 में वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण की थी किन्तु 1892 में उन्होंने लाहौर में ही वकालत प्रारम्भ की। उन दिनों पंजाब में आर्य समाज आन्दोलन पूरे जोरों से चल रहा था। अतः लाला जी ने आन्दोलन में तन-मन-धन से पूरा सहयोग किया।

सुप्रसिद्ध देशभक्त तथा भारत की आजादी के आन्दोलन के प्रखर नेता लाला लाजपतराय का नाम ही देशवासियों में स्फूर्ति तथा प्रेरणा का संचार करता है। उन्होंने वैश्य परिवार में जन्म लेकर क्षत्रियोचित गुण पाये थे। स्वदेश, स्वधर्म तथा स्वसंस्कृति के लिए उनमें जो प्रबल प्रेम तथा आदर था उसी के कारण वे स्वयं को राष्ट्र के लिए समर्पित कर अपना जीवन दे सके। भारत को स्वाधीनता दिलाने वाले महापुरुषों में उनका त्याग, बलिदान तथा देशभक्ति अद्वितीय और अनुपम थी, उनके बहुविध क्रियाकलाप में साहित्य लेखन एक महत्वपूर्ण आयाम है। वे उर्दू तथा अंग्रेजी के समर्थ रचनाकार थे।

जिस समय फिरोजपुर में उन्होंने अनाथालय की स्थापना की उस समय अंग्रेज सरकार द्वारा बंगाल विभाजन का प्रयास किया जा रहा था, उसका उन्होंने डटकर विरोध किया। इस प्रकार सन् 1905 में उनका राजनीति में पदार्पण हो चुका था। 1905 में कांग्रेस ने गोखले जी के साथ उन्हें भारतीय दृष्टिकोण दृढ़ता के साथ रखने के उद्देश्य से इंग्लैंड भेजा। जहाँ उनके ओजस्वी भाषणों से वहाँ के लोग बहुत प्रभावित हुए। लाला जी ने वहाँ से लौटकर बताया कि भारतीयों को विदेशी सहायता छोड़कर अपने पर निर्भर रहना चाहिए।

लाला लाजपत राय की गिनती क्रांतिकारी नेताओं में की जाती थी। उन्होंने अपने ओजस्वी भाषणों व लेखों द्वारा समाज में महान जागृति उत्पन्न की। 1907 में उन्होंने सरदार अजीत सिंह से मिलकर 'कोलोनाइजेशन बिल' का कड़ा विरोध किया जिसके कारण तत्कालीन अंग्रेजी सरकार कांप उठी थी।

दोनों देशभक्तों को बिना मुकदमा चलाये 6 माह के लिए देश निर्वासन देकर माण्डले (वर्मा) जेल में बंद कर दिया गया। यहाँ से रिहा होने पर सरदार अजीत सिंह विदेश से ही स्वतंत्रता आन्दोलन चलाते रहे। 18 नवम्बर 1907 को लाजपतराय जेल से रिहा होने पर लाहौर पहुंचे, जहाँ उनका अभूतपूर्व स्वागत हुआ। बाद में कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने हेतु सूरत पहुँचे। वहाँ पर लोकमान्य तिलक ने कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए उनका नाम प्रस्तुत किया किन्तु गोपाल कृष्ण गोखले ने विरोध करते हुए कहा कि 'यदि आप सरकार की अवज्ञा करेंगे तो सरकारें भी आपके मार्ग में अड़चनें डालेंगी। अतः कांग्रेस में विभाजन व मतभेद रोकने के उद्देश्य से लाला लाजपतराय ने अपना नाम वापिस ले लिया।

लाला लाजपतराय राष्ट्रीय शिक्षा, स्वदेशी के प्रचार, विदेशी कपड़ों का बहिष्कार और संवैधानिक आन्दोलन के महान समर्थक थे। 1914 में उन्होंने शिक्षा न्यास की स्थापना की तथा जलगाँव में राधाकृष्ण हाईस्कूल की नींव रखी। 1914 में वे इंग्लैंड चले गये तथा उसी समय प्रथम विश्वयुद्ध प्रारम्भ हो गया। अतः 1919 तक उनको विदेश में रहना पड़ा, इस मध्य वे अमेरिका और जापान गए किन्तु भारत की आजादी का संघर्ष वहाँ भी जारी रहा। 1919 में वे भारत आये। यहाँ आने पर पंजाब में मार्शल लॉ तथा जलियांवाला बाग का नृशंस हत्याकाण्ड देखा। 1920 में इन घटनाओं पर विचार के लिए कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन हुआ। लाला लाजपत राय उक्त अधिवेशन में सभापति चुने गये। असहयोग आन्दोलन के विरोधी होने के बाद भी उन्होंने असहयोग आन्दोलन का निर्णय होने पर पूरी सक्रियता से उसका समर्थन किया। वे गिरफ्तार हो गये तथा लम्बे समय तक जेल में रहे। जेल से आने के बाद उन्होंने मोतीलाल नेहरू के साथ स्वराज दल गठित किया तथा तत्कालीन केन्द्रीय विधानसभा का चुनाव जीता। तत्कालीन केन्द्रीय विधानसभा में उन्हें स्वराज दल का उपनेता चुना गया।

लाला जी केवल राजनैतिक नेता और कार्यकर्ता ही नहीं थे। उन्होंने जनसेवा का भी सच्चा पाठ पढ़ा था। जब 1896 तथा 1899 (इसे राजस्थान में छप्पन का अकाल कहते हैं, क्योंकि यह विक्रम का 1956 का वर्ष था) में उत्तर भारत में भयंकर अकाल पड़ा तो लाला जी ने अपने साथी लाला हंसराज के सहयोग से अकाल पीड़ित लोगों को सहायता पहुंचाई। जिन अनाथ बच्चों को ईसाई पादरी अपनाने के लिए तैयार थे और अन्ततः जो उनका धर्म परिवर्तन करने का इरादा रखते थे। उन्हें इन मिश्नरियों के चंगुल से बचा कर उन्हें फीरोजपुर तथा आगरा के आर्य अनाथालयों में भेजा। 1905 में कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश) में भयंकर भूकम्प आया। इस समय भी लाला जी सेवा कार्य में जुट गये और डी. ए. वी. कालेज, लाहौर के छात्रों के साथ भूकम्प पीड़ितों को राहत प्रदान की। 1907-08 में उड़ीसा, मध्य प्रदेश तथा संयुक्त प्रान्त (वर्तमान उत्तर प्रदेश) में भी भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा और लाला जी को पीड़ितों की सहायता के लिए आगे आना पड़ा।

1928 में जब अंग्रेजों द्वारा नियुक्त साइमन कमीशन भारत आया तो देश के नेताओं ने उसका बहिष्कार करने का निर्णय लिया। 30 अक्टूबर, 1928 को कमीशन लाहौर पहुंचा तो जनता के प्रबल प्रतिरोध को देखते हुए सरकार ने धारा 144 लगा दी। लाला जी के नेतृत्व में नगर के हजारों लोग कमीशन के सदस्यों को काले झण्डे दिखाने के लिए रेलवे स्टेशन पहुंचे और 'साइमन वापस जाओ' के नारों से आकाश गुंजा दिया। इस पर पुलिस को लाठी चार्ज का आदेश मिला। इसी समय अंग्रेज सार्जेंट साण्डर्स ने लाला जी की छाती पर लाठी का प्रहार किया जिससे उन्हें सख्त चोट पहुंची। उसी सायं लाहौर की एक विशाल जनसभा में एकत्रित जनता को सम्बोधित करते हुए नरकेसरी लाला जी ने गर्जना करते हुए कहा - मेरे शरीर पर पड़ी लाठी की प्रत्येक चोट अंग्रेजी साम्राज्य के कफन की कील का काम करेगी। इस दारुण प्रहार से आहत लाला जी ने अठारह दिन तक विषम ज्वर की पीड़ा भोग कर 17 नवम्बर, 1928 को परलोक के लिए प्रस्थान किया।

लाला लाजपतराय का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे एक साथ ही उत्कृष्ट वक्ता, श्रेष्ठ लेखक, सार्वजनिक कार्यकर्ता, सेवाभावी समाज सेवक, राजनैतिक नेता, शिक्षा शास्त्री, चिन्तक, विचारक तथा दार्शनिक थे। आर्य समाज से ही उन्होंने देश सेवा का पाठ पढ़ा था और स्वामी दयानन्द से उन्होंने समर्पण तथा सेवा का आदर्श ग्रहण किया था। उनके शब्दों में आर्य समाज मेरी माता तथा स्वामी दयानन्द मेरे धर्मपिता हैं। मैंने देश सेवा का पाठ आर्य समाज से ही पढ़ा है। लाला जी के बलिदान के पश्चात् देशबन्धु चितरंजनदास की पत्नी श्रीमती बसन्ती देवी ने एक वक्तव्य प्रसारित कर कहा था कि क्या देश में कोई ऐसा क्रांतिकारी युवक नहीं है जो भारत केसरी लाल जी की मौत का बदला ले सके।

जब यह बात सरदार भगत सिंह तक पहुंची तो उसने लाला जी पर लाठियों का प्रहार करने वाले साण्डर्स को मार कर उस अमर देशभक्त की मौत का बदला ले लिया। लाला लाजपत राय देश के स्वाधीनता संग्राम के महान् सेनानी थे। देशवासी उनके त्याग और बलिदान को सदा स्मरण रखेंगे।

पृष्ठ 6 का शेष

गुरुकुल यमुनातट मंझावली, फरीदाबाद, हरियाणा का रजत जयन्ती समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

कहीं है तो वह वेदमार्ग से ही सम्भव है।

श्री रविदेव गुप्ता जी ने कहा कि आर्य समाज के विद्वानों को बौद्धिक लोगों के साथ आर्य समाज का सार्थक प्रचार–प्रसार करना चाहिए।

सम्पूर्ति सत्र के अवसर पर सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं वेदार्ष महाविद्यालय न्यास के मन्त्री कैप्टन रुद्रसेन जी ने गुरुकुल के इतिवृत्त से सम्बन्धित अपने अनुभवों को प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने परिवार के ऊपर आर्य समाज के प्रभाव का भी उल्लेख किया तथा समस्त ब्रह्मचारियों को निरन्तर आशावादी बनने के लिए प्रेरित किया।

उसके पश्चात गुरुकुल के स्नातक दीपक कुमार जी को सम्मानित किया गया, ज्ञातव्य हो कि दीपक कुमार ने पूर्ण शिक्षा गुरुकुल से ही प्राप्त की अब वह ओलम्पिक खिलाड़ी हैं।

क्षेत्रीय विधयक श्री राजेश नागर जी ने स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा है कि मैं राष्ट्र व संस्कृति के प्रति समर्पित हूँ तथा वैदिक संस्कृति के संरक्षण के लिए इन गुरुकुलों को मैं सदैव आर्थिक सहयोग करने के लिए कटिबद्ध रहूंगा।

पूर्वोत्तर में अनेक गुरुकुलों की स्थापना करने वाले पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी ने निर्देशात्मक आशीर्वाद प्रदान किया एवं गुरुकुल दिनों–दिन उन्नति करें ऐसा आशीर्वाद दिया।

हॉलेण्ड से पधारे गुरुकुल के स्नातक श्री नरदेव यजुर्वेदी जी ने पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी एवं स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है तथा वेद का प्रचार–प्रसार भी हम आर्यों का दायित्व है।

इस रजत जयन्ती समारोह के भोजन प्रसाद के लिए एम.डी.एच. के अधिपति महाशय श्री राजीव गुलाटी जी ने अद्वितीय सहयोग किया। महाशय राजीव गुलाटी गुरुकुल का निरन्तर सहयोग करते रहते हैं। महाशय राजीव गुलाटी के पूज्य पिता जी महाशय धर्मपाल जी भी इस गुरुकुल को सदैव सहयोग किया करते थे, महाशय जी के सहयोग से ही इस गुरुकुल में एक विशाल पानी की टंकी का निर्माण हुआ है।

इस अवसर पर पूर्व मंत्री श्री विपुल गोयल ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

गुरुकुल यमुनातट मंझावली फरीदाबाद (हरियाणा) के रजत जयन्ती के पावन अवसर पर 6 एवं 7 अक्टूबर, 2022 को अखिल भारतीय शास्त्रीय प्रतिस्पर्धा का आयोजन किया गया। इस आयोजन में 4 प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन किया गया – 1. यजुर्वेद कण्ठपाठ, 2. सामवेद कण्ठपाठ, 3. अष्टाध्यायी कण्ठपाठ एवं 4. धातुपाठ–उणादिकोषलिङ्गानुशासन कण्ठपाठ।

सम्पूर्ण प्रतिस्पर्धाओं में 40 संस्थाओं के लगभग 96 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग लिया। यजुर्वेद कण्ठपाठ प्रतिस्पर्धा में तीन प्रतिस्पर्धियों को ग्यारह–ग्यारह हजार रूपये की राशि से सम्मानित किया गया, सामवेद कण्ठपाठ प्रतिस्पर्धा के तीन प्रतिस्पर्धियों को भी ग्यारह–ग्यारह हजार रूपये की राशि से सम्मानित किया गया। अष्टाध्यायी कण्ठपाठ प्रतिस्पर्धा के 15 प्रतिस्पर्धियों में प्रत्येक को 5100 की सम्मान राशि से सम्मानित किया गया एवं धातुपाठ–उणादिकोषलिङ्गानुशासन कण्ठपाठ प्रतिस्पर्धा के 11 प्रतिस्पर्धियों में प्रत्येक को 5100 की सम्मान राशि से सम्मानित किया गया। इसके साथ ही समस्त प्रतिभागियों को उनके मार्गदर्शकों के साथ यात्रा व्यय भी प्रदान किया गया।

सम्पूर्ण रजत जयन्ती समारोह का दायित्व स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज के अतिरिक्त गुरुकुल पौंधा के आचार्य और समारोह के मुख्य संयोजक आचार्य धनंजय जी, गुरुकुल मंझावली के आचार्य जय कुमार जी, मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी प्रधान श्री रामपाल शास्त्री जी, श्री चन्द्रभूषण शास्त्री जी, डॉ. रविन्द्र कुमार शास्त्री, ब्र. शिवदेव आर्य, डॉ. निखिल आर्य, श्री भूपेश शास्त्री, श्री सोमदेव शास्त्री आदि ने अथक परिश्रम करके अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। गुरुकुल का रजत जयन्ती समारोह पूर्ण उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- ***www.facebook.com/SwamiAryavesh*** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य जगत ने खोया एक प्रखर वक्ता, वैदिक विद्वान एवं महर्षि दयानन्द का अनन्य भक्त

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज हुए पंचतत्त्व में विलीन

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध संन्यासी, प्रखर वक्ता, वैदिक विद्वान एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनन्य भक्त, श्रीकृष्ण आर्ष गुरुकुल गोमत (खैर) जिला–अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश) के अधिष्ठाता स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी पलवल (हरियाणा) का दिनांक 7 नवम्बर, 2022 को रात्रि लगभग 8.30 बजे असमय निधन हो गया। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका उपचार चल रहा था परन्तु उन्हें बचाया नहीं जा सका। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के पार्थिव शरीर को दिनांक 8 नवम्बर, 2022 (मंगलवार) को अन्तिम दर्शनार्थ सामुदायिक भवन (कम्युनिटी सेंटर, हुड्डा सेक्टर–2, पलवल, हरियाणा) में 1 बजे तक रखा गया। स्वामी जी महाराज के निधन का समाचार पाकर पूरा आर्य जगत स्तब्ध रह गया और लोगों का कारवां उनके अन्तिम दर्शनार्थ उमड़ पड़ा। उनका अन्तिम संस्कार उनकी इच्छानुसार यमुना तट पर स्थित गुरुकुल मंझावली (फरीदाबाद) में दोपहर 2 बजे पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनके पार्थिव शरीर को आर्य समाज के तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने मुखाग्नि दी। उनके साथ ब्रह्मचारी राजदेव नैष्ठिक तथा श्रीकृष्ण गुरुकुल गोमत के ब्रह्मचारी सुनील भी सम्मिलित हुए। अन्त्येष्टि की पूरी व्यवस्था स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती तथा संयोजन स्वामी आर्यवेश जी ने किया। गुरुकुल के आचार्य जय कुमार जी ने अन्त्येष्टि के लिए आवश्यक घृत, सामग्री एवं लकड़ियों की पूरी व्यवस्था की। अन्त्येष्टि में गुरुकुल के सैकड़ों ब्रह्मचारियों के अतिरिक्त नोएडा, गाजियाबाद, दिल्ली, फरीदाबाद, पलवल, गुरुग्राम, मेवात, आगरा तथा हरियाणा के अन्य जिलों से भी भारी संख्या में लोग सम्मिलित हुए और स्वामी जी को अन्तिम विदाई दी। इस अवसर पर विशेष रूप से हरियाणा प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष श्री उदयभान, पलवल के विधायक श्री दीपक मंगला भी विशेष रूप से पहुँचे और अन्त्येष्टि में भाग लिया।

श्री अमन सिंह, अध्यक्ष कन्या गुरुकुल हसनपुर, होडल, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य, महामंत्री श्री महेन्द्र भाई, कोषाध्यक्ष श्री धर्मपाल आर्य, आर्य पुरोहित सभा के प्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, पं. कंवरपाल शास्त्री, श्री अभयदेव शास्त्री, श्री संतोष शास्त्री व श्री वीरेश प्रधान एटा, श्री किशनपाल सिंह आर्य गाजियाबाद, श्री वीरेश भाटी नोएडा, मा. ज्ञानेन्द्र आर्य गाजियाबाद, मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री जी, डॉ. गजराज सिंह प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद, स्वामी विजयवेश, श्री मकेन्द्र आर्य, श्री जितेन्द्र आर्य, श्री मदन लाल तनेजा, कुंवर रमेश कुमार, श्री महेश आर्य, श्री यादराम आर्य, श्री राजेश आर्य, श्री दिनेश आर्य, श्री महेश कुमार आर्य मंत्री आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद, श्री रघुवीर सिंह आर्य, प्रधान आर्य समाज बल्लभगढ़, श्री सुशील शास्त्री, स्वामी चेतनदेव कन्या गुरुकुल भैइंया चावड़ अलीगढ़ आदि अनेक गणमान्य संन्यासी, आर्य नेता व विद्वान् भी अन्त्येष्टि में सम्मिलित हुए। पलवल शहर तथा ग्रामीण क्षेत्रों से भी बड़ी संख्या में लोगों ने अन्त्येष्टि में भाग लिया।

श्रद्धांजलि सभा का आयोन 15 नवम्बर, 2022 मंगलवार को फरीदाबाद के कम्यूनिटी सेन्टर हुड्डा सेक्टर–2 (निकट टैगोर पब्लिक स्कूल), पलवल में दोपहर 2 से 4 बजे तक आयोजित की जायेगी।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।